कविता

किसकी जनवरी, किसका अगस्त

नागार्जुन

किसकी है जनवरी
किसका अगस्त है ?
कौन यहां सुखी है, कौन यहां मस्त है ?

सेठ है, शोषक है, नामी गला-काटू है
गालियां भी सुनता है, भारी थूक-चाट है
चोर है, डाकू है, झूठा-मक्कार है,
कातिल है, छलिया है, लुच्चा-लबार है
जैसे भी टिकट मिला, जहां भी टिकट मिला,

शासन के घोड़े पर वह भी सवार है,
उसी की जनवरी छब्बीस,
उसी का पन्द्रह अगस्त है!
बाकी सब दुखी है, बाकी सब पस्त है...

कौन है खिला-खिला, बुझा-बुझा कौन है
कौन है बुलन्द आज, कौन आज मस्त है ?
खिला-खिला सेठ है, श्रमिक है बुझा-बुझा
मालिक बुलन्द है, कुली-मजूर पस्त है
सेठ यहां सुखी है, सेठ यहां मस्त है
उसकी है जनवरी, उसी का अगस्त है

पटना है, दिल्ली है, वहीं सब जुगाड़ है
मेला है, ठेला है, भारी भीड़-झाड़ है
फ्रिज है, सोफ़ा है, बिजली का झाड़ है
फैशन की ओट है, सब कुछ उघाड़ है
पब्लिक की पीठ पर बजट का पहाड़ है
गिन लो जी, गिन लो, गिन लो जी, गिन लो
मास्टर की छाती में कै ठो हाड़ है!
गिन लो जी, गिन लो, गिन लो जी, गिन लो
मज़दूर की छाती में कै ठो हाड़ है!
गिन लो जी, गिन लो जी, गिन लो
बच्चे की छाती में कै ठो हाड़ है!
देख लो जी, देख लो जी, देख लो
पब्लिक की पीठ पर बजट का पहाड़ है!

मेला है, ठेला है, भारी भीड़-भाड़ है
पटना है, दिल्ली है, वहीं सब जुगाड़ है
फ्रिज है, सोफ़ा है, बिजली का झाड़ है
महल आबाद है, झोपड़ी उजार है
ग़रीबों की बस्ती में

उखाड़ है, पछाड़ है
धत तेरी, धत तेरी, कुच्छो नहीं! कुच्छो नहीं
ताड़ का तिल है, तिल का ताड़ है
ताड़ के पत्ते हैं, पत्तों के पंखे हैं

पंखों की ओट है, पंखों की आड़ है
कुच्छो नहीं, कुच्छो नहीं....
ताड़ का तिल है, तिल का ताड़ है
पब्लिक की पीठ पर बजट का पहाड़ है

किसकी है जनवरी, किसका अगस्त है!
कौन यहां सुखी है, कौन यहां मस्त है!
सेठ ही सुखी है, सेठ ही मस्त है
मन्त्री ही सुखी है, मन्त्री ही मस्त है
उसी की है जनवरी, उसी का अगस्त है!

हॉकी खिलाड़ी निशा वारसी ने हरियाणा का बढ़ाया सम्मान

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

सोनीपत: अपने संघर्ष के दम पर नए रास्ते खुद बनाए जाते हैं। भारतीय महिला हॉकी टीम में तो वैसे दो मुस्लिम लड़कियाँ निशा और सलमा खेल रही हैं लेकिन यहाँ हम हरियाणा की निशा वारसी की बात करेंगे।

सोनीपत के कालूपुर निवासी सोहराब अहमद की बेटी निशा वारसी ने भी अपने संघर्ष और जज्बे से कामयाबी की इबारत लिखी है। एक वक्त था जब दर्ज़ी पिता सोहराब के पास स्पोर्ट्स शूज व स्टिक खरीदने तक के पैसे नहीं थे। अपने संघर्ष के दम पर नए मुकाम पाने वाली निशा के संघर्ष की कहानी से हर कोई प्रेरित है। 2016 में सोहराब को पैरालिसिस हुआ और चारपाई पर आ गए। आर्थिक तंगी इतनी सामने आई कि मां मेहरून फाम बनाने वाली फैक्ट्री में मजदूरी करने लगीं।

सोहराब ने संघर्ष के किस्से मीडिया से साझा किए। महिला हॉकी टीम की डिफेंडर निशा के पिता सोहराब कहते हैं कि पैरालिसिस हुआ तो परिवार भुखमरी के कगार पर आ गया। तीन बेटियों नगमा, शाइस्ता और निशा के साथ ही बेटे रेहान की परवरिश प्रभावित होने लगी। नगमा और शाइस्ता की बाद में शादी भी की। अल्लाह का शुक्रिया करते हुए सोहराब कहते हैं कि पैरालिसिस हुआ उसी के चार-पांच माह बाद ही बेटी निशा को खेल कोटे से रेलवे में क्लर्क पद पर नौकरी मिल गई।

तभी से बेटी ही घर का जिम्मा संभाल रही है। बेटी ने अपनी मां से भी मजदूरी का काम बंद करा दिया। बेटी हॉकी में मेडल जीतकर लाएगी तो सोनीपत के बस अड्डे के निकट मामू-भांजे की दरगाह पर चादर चढ़ाएंगे। यह भी कहा कि बेटी को बेसन के लड्डू बेहद पसंद हैं। मां ने बेटी को टोक्यो में मेडल लाने की बात कहते हुए लड्डू भी साथ भेजे हैं।

अब ताने मारने वाले ही आते हैं बधाइयां देने

अपनी बेटी के हाकी खेलने को लेकर कहा कि हमें तो पता ही नहीं था कि बेटी कब हॉकी खेलने लगी। बीए की छात्रा निशा सोनीपत के टीकाराम गर्ल्स कालेज में अपनी सहेली नेहा गोयल के साथ अभ्यास करती रहती।

इससे पहले भी स्कूल में हॉकी खेलती रहती। पिता का कहना है कि बेटी को मां ने आगे बढ़ाया। हर रोज स्टेडियम में अभ्यास कराने के लिए लेकर जाना। यह भी कहते हैं कि जो पहले ताने मारते थे वही बधाई देने घर आ रहे हैं। अब सबकी बोलती बंद हो चुकी है।

ननिहाल वालों ने पिता का कराया इलाज, बेटी को दिलाई किट

सोहराब कहते हैं कि पैरालिसिस के बाद घर के लोग दुखी थे। निशा के खरखौदा स्थित ननिहाल वालों ने हौसला बढ़ाते हुए इलाज पर करीब आठ-नौ लाख रुपये खर्च किए। अभी भी एक हाथ काम नहीं करता और ठीक तरह से बात नहीं कर पाते।

सोहराब ने 2006 का किस्सा सुनाया। बेटी को एक बार पंजाब में खेलने जाना था। पहली बार किसी बड़ी प्रतिस्पर्धा में खेलने बेटी जा रही थी, इसलिए स्पोर्ट्स शूज के अलावा किट की जरूरत थी। बेटी और घर वालों का मन उदास था। सोहराब ने संकोच के साथ ससुराल वालों से मदद मांगी। उस वक्त भी बेटी को जूते, स्टिक और किट दिलाने के लिए 15 हजार रुपये भेजे। तब बेटी खेलने जा सकी।

मोदी मॉकड्रिल के क्या कहने

सुब्रतो चटर्जी

शुरुआत 2014 में संसद की सीढ़ियों को चूमने से हुई। लोकतंत्र की वेदी को सम्मान व्यक्त करने का मॉक ड्रिल ।

2016 में नोटबंदी के ज़रिए काला धन, नक्सलवाद आतंकवाद ख़त्म करने के बहाने अपनी पार्टी को धनवान कर 150 व्यक्तियों की लाइन लगा कर हत्या का मॉक ड्रिल ।

बीएसएनएल की क़ीमत पर जियो को स्पेक्ट्रम दे कर राष्ट्रवाद का मॉक ड्रिल ।

इंडियन ऑयल से डीज़ल बेचने का अनुबंध ख़त्म कर रिलायंस ऑयल को रेल्वे में घुसा कर देश हित का मॉक ड्रिल।

अंबाडानी को ठेका दिलाने के लिए जनता के पैसों पर विदेश भ्रमण का मॉक ड्रिल ।

तिगुनी क़ीमत पर राफ़ेल ख़रीद कर देशभक्ति का मॉक ड्रिल।

कश्मीर घाटी को क़ैद कर, धारा 370 हटा कर, हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए मॉक ड्रिल ।

सीएए, एनआरसी के ज़रिए देश को दंगों में झोंक कर नागरिकता तय करने का मॉक ड्रिल ।

पुलवामा में अपने जवानों की हत्या कर जनता को राष्ट्रवादी बनाने का मॉक ड्रिल।

नमस्ते ट्रंप का आयोजन कर कोरोना फैलाने का मॉक ड्रिल ।

अनगिनत चुनावी रैलियों में अनर्गल बयानबाज़ी कर जनता को बेवकूफ बनाने का मॉक ड्रिल।

मन की बात में बकवास परोस कर अमरीकी राष्ट्रपति बनने का मॉक ड्रिल ।

घूस ले कर विदेशों में वैक्सीन बेच कर और ऑक्सीजन की क़िल्लत बना कर पचास लाख लोगों को मार कर जनसंहार का मॉक ड्रिल।

आपको क्या लगता है पारस अस्पताल के डॉक्टरों को मरीज़ों के ऑक्सीजन बंद करने के मॉक ड्रिल के पीछे कोई प्रेरणा नहीं रही होगी ? जिस लोकतंत्र के मॉक ड्रिल में हम 2014 से जी रहे हैं, उसने सुप्रीम कोर्ट, चुनाव आयोग, सीएजी, फ़ाइनैंस

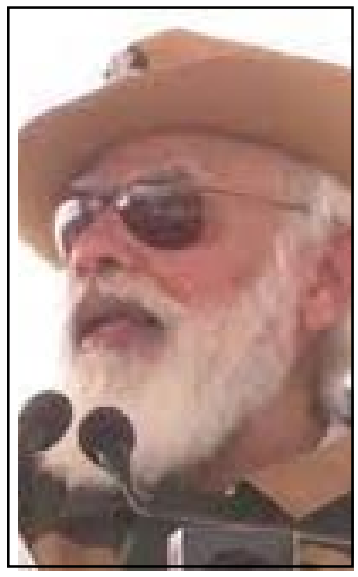

कमीशन, सभी संवैधानिक संस्थाओं का ऑक्सीजन बंद कर दिया है ।

देश वेंटिलेटर पर है। बचा सको तो बचा लो।

जा बेच दे... महापुरुष ऐसे ही बेचा करते हैं

राजेन्द्र चतुर्वेदी

विशाखापट्टनम स्टील प्लांट में 35 हजार कर्मचारी हैं, और उसकी परिसंपत्ति लगभग 3 लाख करोड़ रुपए की है। यह कंपनी लगभग तीन हजार करोड़ सालाना का मुनाफा कमाती है। इसे मोदी सरकार केवल 1300 करोड़ में बेच रही है।

भारतीय जीवन बीमा निगम यानी एलआईसी में करीब डेढ़ लाख कर्मचारी हैं। एलआईसी के पास लगभग सात लाख करोड़ की प्रॉपर्टीज हैं। एलआईसी लगभग 50 हजार करोड़ रुपए का सालाना मुनाफा कमाती है। मोदी सरकार इसकी 25 फीसदी हिस्सेदारी 74 हजार करोड़ में बेचेगी, अगले साल मार्च तक आईपीओ आ जाएगा।

भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड यानी बीपीसीएल के पास 10 लाख करोड़ से ज्यादा की प्रॉपर्टीज हैं। लगभग 5 हजार लोग इसमें प्रत्यक्ष नौकरी करते हैं, जबकि अपने 7986 (सात हजार नौ सौ छियासी) पेट्रोल पंप और लगभग 10 हजार एलपीजी एजेंसियों के जरिए ये कंपनी कितने लोगों को रोजगार देती होगी, इसका गणित लगाते रहिए। ये कंपनी बिकने के लिए तैयार है। ये कंपनी ज्यादा से ज्यादा चार लाख करोड़ में बिकेगी।

विकास की ये तीनों कहानियां मार्च-2022 तक पूरी हो जाएंगी।

इरडा की वेबसाइट पर जाकर सर्च कर लीजिएगा। निजी बीमा कम्पनियों का क्लेम सेटिलमेंट का रेश्यो अधिकतम 62 परसेंट है।

यानी, अगर 100 पॉलिसीहोल्डर क्लेम करते हैं तो निजी बीमा कम्पनियां केवल 62 लोगों का क्लेम स्वीकार करती हैं, 38 लोगों को टरका देती हैं। जबकि एलआईसी का क्लेम सेटिलमेंट रेश्यो 99.97 फीसदी है। यानी एक हजार में से तीन लोग ऐसे होते हैं, जिनका क्लेम एलआईसी सेटल नहीं करती।

क्लेम और पॉलिसी के मैच्योर होने का फर्क तो आप जानते ही हैं। यहां मैच्योरटी की नहीं, क्लेम की बात की जा रही है।

ये बात इसलिए की गई है, ताकि निजीकरण का सपोर्ट करने अगर कोई पॉलिसीहोल्डर सज्जन इस लेख पर पधारें तो उन्हें एक बार यह सोचने का मौका मिले कि कहीं ऐसा न हो कि वे भी असमय अनंत की यात्रा निकल जाएं और इधर मृत्यु लोक में उनके बीवी बच्चों को क्लेम के सेटिलमेंट के लिए धक्के खाने पड़ें और फिर भी हाथ में कुछ न आए।

भाई, जीवन का क्या ठिकाना। ऐसा भी नहीं है कि आप सपोर्टर हैं, तो निजी बीमा कंपनियां आपके बीवी बच्चों का क्लेम सेटल कर देंगी। न, उनके लिए सब धान 22 पसेरी है।

जागो भारत, जागो...।